पद १८

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

साष्टांग प्रणिपात तया माझा गे। कोण असेल ऐसा गुरुराजा।।ध्रु.।। मी तूंपण द्वैतचि नेणे सकळिह जग ब्रह्मचि जाणे।।१।। शाश्वत पद जाणुनि बोले। प्रेमे आनंदलहरी डोले।।२।। दर्शन इच्छिति देव जया। माणिक अनन्य शरण तया।।३।।